Gyanvividha, Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026 : PP-254-257

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026
Page No.- 254-257

©2026 Gyanvividha

https://journal.gyanvividha.com

Author's :

आतिरा शशांकन

शोधार्थी, हिंदी विभाग,
महाराजस कॉलेज, एर्नाकुलम, केरल.

Corresponding Author :

आतिरा शशांकन

शोधार्थी, हिंदी विभाग,
महाराजस कॉलेज, एर्नाकुलम, केरल.

समाज में महिलाओं के प्रति मौजूद भेदभाव : ममता कालिया के 'बेघर' के विशेष संदर्भ में

शोधसार : ममता कालिया हिंदी साहित्य की सशक्त कथाकारों में प्रमुख हैं। उन्होंने अपने उपन्यास 'बेघर' में स्त्री जीवन से संबंधित सामाजिक एवं मानसिक संघर्षों को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत शोधपत्र में 'बेघर' का स्त्री-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया है। विशेष रुप से महिलाओं के प्रति सामाजिक भेदभाव, पितृसत्तात्मक मानसिकता, लैंगिक असमानता, सामाजिक नैतिकता तथा स्त्री अस्मिता से जुड़े प्रश्नों का विश्लेषण किया गया है। उपन्यास के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि समाज स्त्री के व्यक्तित्व का मूल्यांकन उसकी तथाकथित पवित्रता के आधार पर करता है, जिसके कारण उसे मानसिक एवं सामाजिक स्तर पर अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ता है। साथ ही, यह कृति समाज में विद्यमान दोहरे नैतिक मानदंडों तथा स्त्री के प्रति संकीर्ण दृष्टिकोण को प्रभावशाली ढंग से उजागर करती है।

बीज शब्द : स्त्री-विमर्श, पितृसत्ता, स्त्री-अस्मिता, यौन शुचिता, लैंगिक असमानता, सामाजिक भेदभाव, स्त्री-स्वतंत्रता।

प्रस्तावना : समाज में महिलाओं के प्रति भेदभाव लंबे समय से विभिन्न रुपों में मौजूद रहा है। समय के साथ महिलाओं ने शिक्षा, रोजगार और अन्य क्षेत्रों में प्रगति की है, फिर भी उन्हें समान दृष्टि से नहीं देखा जाता। अक्सर स्त्री का मूल्यांकन उसके गुणों, प्रतिभा और व्यक्तित्व के बजाय सामाजिक मानदंडों के आधार पर किया जाता है। विशेष रूप से भारतीय समाज में स्त्री के चरित्र और व्यवहार को कठोर मानदंडों पर परखा जाता है, जबकि पुरुषों के लिए ऐसे नियम उतने कठोर नहीं होते। यही दोहरा दृष्टिकोण महिलाओं के प्रति भेदभाव और लैंगिक असमानता को बढ़ावा देता है।

आधुनिक हिंदी साहित्य ने इस सामाजिक सोच का विरोध किया है। विशेष रुप से महिला उपन्यासकारों ने स्त्री जीवन की

समस्याओं, संघर्षों और अनुभवों को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। उन्होंने यह दिखाया है कि महिलाओं के साथ होने वाला भेदभाव केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवस्था से जुड़ा हुआ प्रश्न है। इसी संदर्भ में ममता कालिया का उपन्यास 'बेघर' महत्वपूर्ण माना जाता है।

ममता कालिया ने 'बेघर' में मध्यवर्गीय समाज की मानसिकता, पुरुष-अहम तथा स्त्री के प्रति स्थापित नैतिक मान्यताओं का अत्यंत यथार्थ चित्रण किया है। उपन्यास यह दर्शाता है कि प्रेम और संबंधों में विश्वास की अपेक्षा स्त्री की तथाकथित शुचिता को अधिक महत्व दिया जाता है। स्त्री की भावनाएँ, संघर्ष और व्यक्तित्व गौण हो जाते हैं, जबकि उसका मूल्यांकन केवल उसकी देह और उसकी पवित्रता के आधार पर किया जाता है।

उपन्यास का नायक परमजीत एक मध्यवर्गीय युवक है, जो अपने पारंपरिक पारिवारिक परिवेश से निकलकर नौकरी के लिए मुंबई आता है। महानगरीय जीवन, आधुनिक वातावरण और नए सामाजिक संबंध उसके जीवन में परिवर्तन लाते हैं। इसी दौरान उसकी मुलाकात संजीवनी से होती है। संजीवनी शिक्षित, आत्मनिर्भर और आधुनिक विचारों वाली युवती है। दोनों के बीच प्रेम विकसित होता है और उनका संबंध धीरे-धीरे भावनात्मक निकटता तक पहुँचता है।

किन्तु उपन्यास का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ तब आता है, जब परमजीत संजीवनी के साथ शारीरिक संबंध स्थापित करता है। उस समय उसे यह ज्ञात होता है कि संजीवनी 'कुँवारी' नहीं है। यही घटना उसके भीतर गहरे मानसिक द्वंद्व को जन्म देती है। वह यह स्वीकार नहीं कर पाता कि जिस स्त्री से वह प्रेम करता है, उसका भी एक अतीत हो सकता है। यहीं से उपन्यास में स्त्री की यौनिकता, यौन शुचिता तथा महिलाओं के प्रति समाज के भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण का प्रश्न अत्यंत तीव्र रूप में सामने आता है।

परमजीत आधुनिक जीवनशैली अपनाने वाला युवक है, परंतु मानसिक स्तर पर वह परंपरागत पितृसत्तात्मक सोच से मुक्त नहीं हो पाता। उसके भीतर यह धारणा गहराई से बैठी हुई है कि एक आदर्श स्त्री वही है, जो पूर्णतः 'शुद्ध' और 'अस्पर्शित' हो। वह संजीवनी का मूल्यांकन उसके व्यक्तित्व, संवेदनशीलता और प्रेम के आधार पर नहीं, बल्कि उसके कौमार्य के आधार पर करने लगता है। इस प्रकार उपन्यास यह स्पष्ट करता है कि आधुनिक समाज में भी स्त्री की यौनिकता को स्वतंत्र रूप से स्वीकार नहीं किया गया है।

संजीवनी का चरित्र आधुनिक स्त्री की त्रासदी को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करता है। वह अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने में सक्षम है, फिर भी समाज और पुरुष मानसिकता द्वारा निर्मित मानदंडों का सामना करने के लिए विवश है। उसके माध्यम से लेखिका ने स्त्री-अस्मिता, स्वतंत्रता तथा सामाजिक स्वीकृति से जुड़े महत्वपूर्ण प्रश्नों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

यद्यपि संजीवनी आधुनिक सोच और आत्मनिर्भरता का प्रतिनिधित्व करती है, फिर भी समाज उसे उसकी देह के आधार पर परखता है। उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व केवल इस कारण संदेह के घेरे में आ जाता है क्योंकि वह समाज द्वारा निर्धारित मानदंडों पर खरी नहीं उतरती। यहाँ लेखिका यह प्रश्न उठाती हैं कि क्या स्त्री की पहचान केवल उसके शरीर से निर्धारित की जा सकती है? क्या उसका प्रेम, उसकी संवेदनाएँ और उसकी मनुष्यता कोई महत्व नहीं रखती?
संजीवनी के चरित्र की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि उसके अतीत को समझने का प्रयास कोई नहीं करता। परमजीत जिस "अपूर्णता" को संजीवनी के चरित्र का दोष मानता है, उसके पीछे एक दर्दनाक अनुभव छिपा हुआ है। संजीवनी के जीवन में विपिन नामक व्यक्ति द्वारा किया गया दुर्व्यवहार उसकी मानसिक पीड़ा का कारण बनता है। यह घटना उसकी इच्छा या स्वीकृति का परिणाम नहीं थी, बल्कि पुरुषवादी मानसिकता द्वारा स्त्री पर किए गए शोषण का उदाहरण थी।

किन्तु समाज स्त्री की परिस्थिति या उसकी पीड़ा को समझने के बजाय सीधे उसके चरित्र पर प्रश्नचिह्न लगा

देता है। परमजीत भी संजीवनी की सच्चाई जानने का प्रयास नहीं करता। वह केवल उसकी तथाकथित "शुचिता" के आधार पर उसे अस्वीकार कर देता है। यहाँ ममता कालिया यह स्पष्ट करती हैं कि पितृसत्तात्मक समाज स्त्री के अनुभवों और उसकी भावनात्मक यातना की अपेक्षा उसकी देह को अधिक महत्व देता है।

संजीवनी का मौन आधुनिक समाज की उन असंख्य स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करता है, जो यौन हिंसा या शोषण का शिकार होने के बाद भी सामाजिक भय और चरित्रहनन की आशंका के कारण सच बोल नहीं पातीं। इस प्रकार 'बेघर' केवल स्त्री की यौन शुचिता का प्रश्न नहीं उठाता, बल्कि महिलाओं के प्रति समाज में विद्यमान भेदभावपूर्ण और असंवेदनशील मानसिकता को भी उजागर करता है।

संजीवनी से अलग होने के बाद परमजीत का विवाह रमा से होता है। रमा पारंपरिक भारतीय पत्नी की छवि प्रस्तुत करती है। वह घरेलू है, पति-परायण है और सामाजिक मान्यताओं के अनुरूप जीवन जीती है। परमजीत को लगता है कि अब उसे आदर्श पत्नी मिल गई है, किन्तु विवाह के बाद भी वह संतुष्ट नहीं रह पाता। उसके वैवाहिक जीवन में आत्मीयता और मानसिक सामंजस्य का अभाव बना रहता है। इससे उपन्यास यह स्पष्ट करता है कि किसी संबंध की सफलता केवल स्त्री की यौन शुचिता पर आधारित नहीं हो सकती। संबंधों की वास्तविक नींव विश्वास, संवेदना और भावनात्मक समझ होती है।

इसी संदर्भ में रमा और संजीवनी के चरित्रों के माध्यम से ममता कालिया समाज में महिलाओं के प्रति भेदभाव के दो अलग-अलग रूपों को दिखाती हैं। संजीवनी आधुनिक सोच और आत्मनिर्भरता का प्रतिनिधित्व करती है, फिर भी उसे उसके अतीत के कारण अस्वीकार कर दिया जाता है। दूसरी ओर, रमा पारंपरिक भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है, जो समाज की मान्यताओं के अनुसार जीवन जीती है। फिर भी उसका वैवाहिक जीवन परमजीत को अपेक्षित संतोष नहीं दे पाता। इससे स्पष्ट होता है कि समाज आज भी स्त्री को रुढ़िवादी मानदंडों के आधार पर परखता है, जो महिलाओं के प्रति भेदभाव को बढ़ावा देता है।

उपन्यास में पुरुष और स्त्री के लिए अलग-अलग नैतिक मानदंडों को भी दिखाया गया है। समाज पुरुष के अतीत और उसके संबंधों को सहजता से स्वीकार कर लेता है, जबकि स्त्री को कठोर मानदंडों पर परखा जाता है। यह दोहरा दृष्टिकोण लैंगिक असमानता को बढ़ावा देता है और स्त्री की स्वतंत्र पहचान में बाधा बनता है। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि यदि संजीवनी की जगह कोई पुरुष होता, तो क्या समाज उसके साथ भी ऐसा ही व्यवहार करता? संभवतः नहीं, क्योंकि पुरुष की गलतियों और उसके अतीत को सामान्य मान लिया जाता है, जबकि स्त्री का मूल्यांकन उसके चरित्र के आधार पर किया जाता है। इस प्रकार उपन्यास स्त्री और पुरुष के लिए बने अलग-अलग नैतिक मानदंडों को उजागर करता है। ममता कालिया ने इस मानसिकता की आलोचना करते हुए स्त्री के प्रति समान और मानवीय दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया है।

उपन्यास का शीर्षक बेघर भी अत्यंत अर्थपूर्ण है। यहाँ "घर" केवल भौतिक अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुआ, बल्कि मानसिक और भावनात्मक सुरक्षा के प्रतीक के रूप में सामने आता है। संजीवनी सामाजिक अस्वीकृति के कारण भावनात्मक रूप से बेघर हो जाती है, वहीं परमजीत अपनी संकीर्ण मानसिकता के कारण मानसिक शांति खो देता है। इस प्रकार उपन्यास यह संकेत करता है कि पितृसत्तात्मक सोच केवल स्त्री को ही नहीं, बल्कि पुरुष को भी भीतर से अस्थिर कर देती है।

इसी संदर्भ में ममता कालिया ने उपन्यास में महानगरीय जीवन और मध्यवर्गीय मानसिकता का अत्यंत यथार्थ चित्रण किया है। मुंबई जैसा महानगर आधुनिकता और स्वतंत्रता का प्रतीक है, किंतु मानसिक स्तर पर समाज अभी भी रुढ़िवादी सोच से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाया है। लोग आधुनिक जीवनशैली को स्वीकार कर लेते हैं, लेकिन स्त्री की स्वतंत्रता और उसके अतीत को सहज रुप से स्वीकार नहीं कर पाते। यही आधुनिक समाज का सबसे बड़ा अंतर्विरोध

है, जिसे लेखिका ने अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

स्त्री-विमर्श की दृष्टि से यह उपन्यास अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह स्पष्ट करता है कि समाज में स्त्री और पुरुष के लिए अलग-अलग नैतिक मानदंड बनाए गए हैं। पुरुष को अधिक स्वतंत्रता प्राप्त है, जबकि स्त्री से त्याग, पवित्रता और मर्यादा की अपेक्षा की जाती है। ममता कालिया ने इस दोहरे नैतिक दृष्टिकोण का विरोध करते हुए स्त्री की स्वतंत्र पहचान और आत्मसम्मान की आवश्यकता को रेखांकित किया है।

यदि वर्तमान सामाजिक संदर्भ में देखा जाए तो 'बेघर' आज भी उतना ही प्रासंगिक प्रतीत होता है। तकनीकी विकास, आधुनिक शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के बावजूद स्त्री की यौनिकता को लेकर समाज की मानसिकता में पूर्ण परिवर्तन नहीं आया है। आज भी स्त्री के निजी जीवन, उसके संबंधों और उसकी स्वतंत्रता को नैतिकता के आधार पर परखा जाता है। 'बेघर' में यह स्पष्ट होता है कि समाज आज भी स्त्रियों को पुरुषों की तुलना में अधिक कठोर मानदंडों पर परखता है। संजीवनी इसका प्रमुख उदाहरण है।

सोशल मीडिया के दौर में "मोरल पुलिसिंग", "स्लट शेमिंग" और स्त्री के चरित्र पर सार्वजनिक टिप्पणी जैसी प्रवृत्तियाँ यह सिद्ध करती हैं कि स्त्री की यौनिकता आज भी सामाजिक नियंत्रण और भेदभाव का विषय बनी हुई है। आज की शिक्षित और आत्मनिर्भर स्त्री अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेना चाहती है, किंतु समाज अभी भी उसके शरीर और उसकी इच्छाओं पर नियंत्रण स्थापित करना चाहता है। इस संदर्भ में 'बेघर' केवल एक साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि आधुनिक समाज की मानसिक संरचना को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम बन जाती है। यह उपन्यास हमें यह सोचने के लिए बाध्य करता है कि क्या वास्तव में हमारा समाज आधुनिक हो गया है, या फिर आधुनिकता केवल बाहरी जीवनशैली तक सीमित रह गई है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'बेघर' समाज में महिलाओं के प्रति विद्यमान भेदभाव को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने वाला महत्वपूर्ण उपन्यास है। यह उपन्यास पितृसत्तात्मक समाज की संकीर्ण मानसिकता को उजागर करता है तथा स्त्री के प्रति भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण और दोहरे नैतिक मानदंडों पर गंभीर प्रश्न उठाता है। संजीवनी आधुनिक स्त्री की पीड़ा, संघर्ष और अस्मिता का प्रतीक है, जबकि परमजीत आधुनिक पुरुष के भीतर छिपी पारंपरिक मानसिकता का प्रतिनिधि है।

ममता कालिया ने इस उपन्यास के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि किसी भी संबंध की वास्तविक नींव विश्वास, प्रेम और संवेदनशीलता होती है, न कि स्त्री की तथाकथित पवित्रता। इस दृष्टि से 'बेघर' केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि आधुनिक समाज की नैतिक संरचना पर गंभीर प्रश्न उठाने वाली एक महत्वपूर्ण साहित्यिक कृति है।
उपन्यास यह संकेत करता है कि जब तक स्त्रियाँ अपनी शक्ति और अस्मिता के प्रति सजग नहीं होंगी, तब तक पितृसत्तात्मक मानसिकता के प्रभाव में लैंगिक असमानता बनी रह सकती है। स्त्री की स्वतंत्र पहचान और आत्मसम्मान की स्वीकार्यता समाज में समानता की दिशा में आवश्यक है।

संदर्भ सूची :

1. कालिया, ममता (2002). बेघर. साक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. बीजापुरे, फैमिदा (2004). ममता कालिया : व्यक्तित्व एवं कृतित्व. विनय प्रकाशन, कानपुर।
3. वर्मा, कल्पना (2019). स्त्री विमर्श : विविध पहलू. लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. शर्मा, सीमा (2016). ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना. अनुसंधान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर।

•